International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवय विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सुप्रिया राय
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. आर. के. रायजादा
सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
विस्तार शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवय विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 400 किशोरवय विद्यार्थियों {शहरी क्षेत्र के 200 विद्यार्थी (100 छात्र व 100 छात्राएं) तथा ग्रामीण क्षेत्र के 200 विद्यार्थी (100 छात्र व 100 छात्राएं)} का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा कर उन पर डॉ. एम. सिंह की 'तनाव मापनी' एवं डॉ. रोमा पाल की 'सामाजिक समायोजन मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी क्षेत्र/ग्रामीण क्षेत्र/समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर तनाव स्तर (उच्च एवं निम्न) का सार्थक प्रभाव पाया गया तथा उच्च तनाव स्तर वाले शहरी क्षेत्र/ग्रामीण क्षेत्र/समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन, निम्न तनाव स्तर वाले शहरी क्षेत्र/ग्रामीण क्षेत्र/समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया।

शिक्षा जीवन की आधार शिला है। इसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार, चरित्र, आचरण, मनोवृत्ति, भावनाओं, विचारों आदि में जों परिवर्तन होते हैं, उसके कारण वह सुसंस्कृत व सुन्दर जीवन व्यतीत करने की क्षमता प्राप्त करता है, और इस प्रकार अपना विकास करता हुआ समाज का ही हित करता है। वर्तमान भारत की आधी आबादी से ज्यादा जनसंख्या युवाओं की है और ये युवा ही भविष्य में भारत की तस्वीर के

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

निर्माणकर्ता हैं। दूसरी ओर एक बड़ी संख्या किशोर विद्यार्थियों की है जो युवाओं में परिवर्तित होने वाली है। किशोरावस्था को 'जीवन का समस्यात्मक काल' कहा जाता है। **स्टैनले हाल के अनुसार "किशोरवस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान एवं विरोध की अवस्था है।"** किशोर विद्यार्थियों को उम्र के इस पड़ाव पर अनेक समस्याओं जैसे – व्यवसाय चुनने की समस्या, विषमलिंगी के प्रति आकर्षण एवं प्रेम, अपराध प्रवृत्ति, स्वतंत्रता की अभिलाषा, निर्णय लेने में कठिनाई, समायोजन की समस्या आदि का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण किशोरों में तनाव, कुण्ठा, कुसमायोजन जैसी समस्याएं भी जन्म लेती है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी भविष्य में उच्च शिक्षा में प्रवेश की चाह तथा व्यवसाय या नौकरी में संलग्न होने के उद्देश्य से प्रतियोगी परिक्षाओं में सम्मिलित होते है। भविष्य में सफल या असफल होने की चिंता उनमें तनाव पैदा करती है। जिसके कारण कभी–कभी उनके सामाजिक समायोजन में कमी या गिरावट देखी जाती है। इन चुनौतियों का सामना तथा उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान करने के लिये आवश्यक है कि तनाव उत्पन्न करने वाले कारकों का पता लगााकर उनका उचित प्रकार से मार्गदर्शन किया जाये जिससे वे भविष्य के भारत के कुशल राजनीतिज्ञ, भावी चिकित्सक, इंजीनियर, प्रबंधक, समाज सेवक, कुशल अध्यापक, अभिभावक आदि बन सकें।

अतः यदि हमें विद्यार्थियों का बेहतर समायोजन करना है, तो उसे तनावमुक्त वातावरण प्रदान करना होगा, जिससे उसमें तनाव उत्पन्न न हो तथा वह सभी क्षेत्रों में अपना समायोजन बेहतर कर सकें। अतः उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समस्या का चयन शोधकार्य हेतु किया गया है।

प्रस्तुत शोध से संबंधित दोनों चरों, स्वतंत्र चर तनाव एवं आश्रित चर सामाजिक समायोजन से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **हुसैन, अकबर; कुमार, आशुतोष एवं हुसैन, आबिद (2008)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षणिक तनाव एवं समायोजन के मध्य औसत स्तर का सार्थक ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। पब्लिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षणिक तनाव एवं समायोजन के मध्य औसत स्तर का सार्थक ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। **पुरी, पी. एवं शर्मा, एस. (2010)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि गृह, स्वास्थ्य सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक, समग्र समायोजन तथा तनाव के मध्य सार्थक ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। **अबूबकर, अबु यजीद एवं ईसहाक, नौरोही मोहम्मद (2014)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के अवसाद एवं मनोवैज्ञानिक, सामाजिक समायोजन के मध्य निम्न स्तर का सार्थक ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। **पाठक, योगेश कुमार वी. (2014)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि महाविद्यालयीन स्तर के छात्र व छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक समायोजन के मध्य उच्च स्तर का सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया। **शर्मा, स्मृति; सन्धु, पुनीत एवं जर्बी, डेजी (2015)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि अधिगम अयोग्यता वाले विद्यार्थियों के सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया। **देवी, आर. सत्या एवं साज, मोहन (2015)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि अधिकांशतः छात्राओं (85.71 प्रतिशत)

में तनाव का मुख्य कारण उनकी शैक्षणिक समस्याएँ थी जबकि छात्रों के मामले में यह संख्या अपेक्षाकृत कम (78.04 प्रतिशत) थी। **सारस्वत, ममता; बूरा, जगबीर सिंग एवं सिंह, बलजीत (2016)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्राओं के तनाव स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा खिलाड़ी छात्राओं का सामाजिक समायोजन, गैर सामाजिक खिलाड़ी छात्राओं से बेहतर पाया गया। **सिंह, कुलबिंदर (2016)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि शारीरिक शिक्षा एवं गैर शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों के तनाव एवं सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **कुमार, प्रदीप एवं पलाई, प्रियंका कौर (2016)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि विश्वविद्यालयीन विद्याथियों के तनाव तथा समायोजन के मध्य सार्थक ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।

उपरोक्त अध्ययनों की समीक्षा करने पर शोधकर्ता ने यह पाया कि तनाव एवं सामाजिक समायोजन से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं, परंतु सामाजिक समायोजन पर तनाव के प्रभाव से संबंधित अधिक कोई भी शोध नहीं किये गये हैं, इसी कारण शोधकर्ता ने सामाजिक समायोजन पर तनाव के प्रभाव से संबंधित शोध कार्य करने का निश्चय किया।

उद्देश्य :– प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्न उद्देश्य लिए गए हैं –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :– प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

उपकरण :– प्रस्तुत अध्ययन में निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया है –

1. तनाव मापनी – डॉ. एम. सिंह
2. सामाजिक समायोजन मापनी – डॉ. रोमा पाल

विधि :–

सर्वप्रथम होशंगाबाद जिले में स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की कक्षा बारहवीं में अध्ययनरत् एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले 400 किशोरवय विद्यार्थियों {शहरी क्षेत्र के 200 विद्यार्थी (100 छात्र व 100 छात्राएं) तथा ग्रामीण क्षेत्र के 200 विद्यार्थी (100 छात्र व 100 छात्राएं)} का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा कर उन पर डॉ. एम. सिंह की 'तनाव मापनी' एवं डॉ. रोमा पाल की 'सामाजिक समायोजन मापनी' का प्रशासन किया गया एवं प्राप्तांकों के आधार उनका शहरी क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र, उच्च तनाव स्तर व निम्न तनाव स्तर, छात्र व छात्राओं में वर्गीकरण एवं सारणीयन कर मॉस्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

परिकल्पना 01 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका 01

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	तनाव स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
छात्र	उच्च	56	96.32	7.79	2.98	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	44	91.75	7.48		
छात्राएं	उच्च	66	99.17	5.56	3.97	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	34	93.03	8.08		
विद्यार्थी	उच्च	122	97.86	6.83	5.16	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	78	92.31	7.78		

स्वतंत्रता के अंश – 98, 198 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 2.63, 2.60

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी क्षेत्र के उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 2.98, 3.97, 5.16 स्वतंत्रता के अंश 98, 98, 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.63, 2.63, 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी क्षेत्र के उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र के उच्च तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन, शहरी क्षेत्र के निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया, अर्थात् शहरी क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर तनाव स्तर (उच्च एवं निम्न) का सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना 02 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका 02

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	तनाव स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
छात्र	उच्च	45	100.18	8.20	4.59	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	55	93.00	7.22		
छात्राएं	उच्च	58	100.36	7.09	3.64	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	42	95.67	5.79		
विद्यार्थी	उच्च	103	100.28	7.60	6.03	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	97	94.15	6.77		

स्वतंत्रता के अंश – 98, 198 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 2.63, 2.60

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले ग्रामीण क्षेत्र के उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के

सामाजिक समायोजन में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 4.59, 3.64, 6.03 स्वतंत्रता के अंश 98, 98, 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.63, 2.63, 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले ग्रामीण क्षेत्र के उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र के उच्च तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन, ग्रामीण क्षेत्र के निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया, अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर तनाव स्तर (उच्च एवं निम्न) का सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना 03 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका 03

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	तनाव स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
छात्र	उच्च	101	98.04	8.21	5.08	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	99	92.44	7.37		
छात्राएं	उच्च	124	99.73	6.35	5.30	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	76	94.49	7.03		
विद्यार्थी	उच्च	225	98.97	7.29	7.67	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न	175	93.33	7.28		

स्वतंत्रता के अंश – 198, 398 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 2.60, 2.59

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/ विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 5.08, 5.30, 7.67 स्वतंत्रता के अंश 198, 198, 398 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60, 2.60, 2.59 की अपेक्षाकृत अधिक हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च तनाव स्तर वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन, निम्न तनाव स्तर वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया, अर्थात् समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/ विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर तनाव स्तर (उच्च एवं निम्न) का सार्थक प्रभाव पाया गया।

निष्कर्ष :–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले शहरी क्षेत्र के उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र के उच्च तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन, शहरी क्षेत्र के निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया, अर्थात् शहरी क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर तनाव स्तर (उच्च एवं निम्न) का सार्थक प्रभाव पाया गया।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले ग्रामीण क्षेत्र के उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र के उच्च तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन, ग्रामीण क्षेत्र के निम्न तनाव स्तर वाले किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया, अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर तनाव स्तर (उच्च एवं निम्न) का सार्थक प्रभाव पाया गया।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले उच्च तथा निम्न तनाव स्तर वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च तनाव स्तर वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन, निम्न तनाव स्तर वाले समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया, अर्थात् समग्र किशोरवय छात्र/छात्रा/ विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर तनाव स्तर (उच्च एवं निम्न) का सार्थक प्रभाव पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची//

1. शर्मा, आर.ए., (1995) ''शिक्षा अनुसंधान'', सूर्या पब्लिकेशंस, मेरठ
2. श्रीवास्तव, डी.एन., (नवीन संस्करण) ''सांख्यिकी एवं मापन'', विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा
3. सिंह, अरूण कुमार (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', भारती भवन पब्लिशर्स, पटना
4. वालिया, जे.एस. (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें'', पाल पब्लिशर्स, जालंधर

5. **Abu Bakar, Abu Yazid and Ishak, Noriah Mohd. (2014)** Depression, Anxiety, Stress and Adjustments among Malaysian Gifted Learners: Implication towards School Coonseling Provision, *International Education Studies, Vol. 7, No. 13, 2014, Pg. No. 6 – 13*
6. **Devi, R. Sathya and Shaj, Mohan (2015)** "A Study on Stress and its Effects on College Students", *International Journal of Scientific Engineering and Applied Science (IJSEAS), Volume 1, Issue 7, Octomber 2015, Pg. No. 449 – 456*
7. **Hussain, Akbar; Kumar, Ashutosh and Hussain, Abid (2008)** Academic Stress and Adjustment Among High School Students, *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, April 2008, Volume 34, Special Issue, Pg. No. 70 – 73*
8. **Kumar, Pradeep and Palai, Priyanka, Kaur (2016)** Relationship among Stress, Adjustment and Homesickness in University Students, *International Journal for Innovative Research in Multidisciplinary Field, Volume 2, Issue 6, June 2016, Pg. No. 101 – 106*
9. **Pathak, Yogesh Kumar V. (2014)** Mental Health and Social Adjustment Among College Students, *International Journal of Public Mental Health and Neurosciences, Volume 1, Issue 1, December 2014, Pg. No. 11 – 14*
10. **Puri, P and Sharma, S (2010)** "Relationship of stress with adjustment in university girls", *Indian Psychological Review vol 75, Special Issue year 2010, page 315-318*
11. **Sahrawat, Mamta; Boora, Jagbir Sigh and Singh, Baljit (2016)** Comparison of Self-Concept, Stress and Social Adjustment Between Sports Women and Non Sports Women, *International Journal of Management and Applied Secience, Volume 2, Issue 6, January 2016, Pg. No. 10 -13*
12. **Sharma, Samriti; Sandhu, Puneet and Zarbi, Dazy (2015)** Adjustment Patterns of Students with Learning Disability in Government Schools of Chandigarh, *International Journal of Education and Psychological Research (IJEPR), Volume 4, Issue 4, December 2015, Pg. No. 136 – 139*
13. **Singh, Kulwinder (2016)** Comparison of Self-Concept, Stress and Social Adjustment between Physical education and non-physical education students, *International Journal of Physical Education, Sports and Health, 2016, 3(4); Pg. No. 30-31*